B.A. III
Paper - 7th

Political Development

Topic - राजनीतिक विकास का अर्थ और परिभाषा एवं राजनीतिक विकास के साधन।

विकास मानव जीवन की विशेषता है। प्रत्येक संस्था, उसका आचरण, सभ्यता और संस्कृति का रूप विभिन्न युग की परिस्थितियों के प्रभाव से विकसित होते रहते हैं। लेकिन राजनीतिक विकास के रूप में प्रयोग अस्पष्टता है। कुछ विद्वान राजनीतिक विकास को राजनीति की ऐसी परिस्थिति मानते हैं जो कि आर्थिक उन्नति में सुविधा पहुंचा सके। कई विद्वान औद्योगिक समाजों की विशेष राजनीति के रूप में राजनीतिक विकास का अध्ययन करते हैं। कुछ लोग, राजनीतिक विकास को राजनीतिक आधुनिकरण का सूचक मानते हैं। यह भी कहा जाता है कि राजनीतिक विकास राज्य की संस्थाओं के प्रसंग में राष्ट्रवाद की राजनीति है। इस दृष्टिकोण से राष्ट्रवाद राजनीतिक विकास की आवश्यक परिस्थिति है। राजनीतिक विकास का आंशिक पहलू प्रशासकीय और वैधानिक विकास भी है। राजनीतिक विकास में एक राज्य की गैर-सत्ताधारी संस्थाएं भी आ जाती हैं। कई लोग यह भी मानते हैं कि राजनीतिक विकास में ~~एक राज्य की गैर सत्ताधारी संस्थाएं~~ कुछ सीमा तक यह भी समाविष्ट है कि अधिक से अधिक लोग राजनीतिक कर्मों में भाग लें।

राजनीतिक विकास के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए दो दृष्टिकोण प्रचलित हुए। एकमार्गी दृष्टिकोण तथा बहुमार्गी दृष्टिकोण।

राजनीतिक विकास :- 'राजनीतिक विकास' संकल्पना पर विचार करने वालों में ज्यूसेपन पाई का नाम अग्रणी है। पाई ने सन् 1963 से इस विषय पर गम्भीर रूप से सोचना प्रारम्भ किया। इसने अपनी ग्रन्थ "Aspect of Political Development" में प्रयोग विस्तार से राजनीतिक विकास की संकल्पना का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। जो निम्नलिखित है।

1. राजनीतिक विकास आर्थिक विकास की राजनीतिक पूर्व शर्त के रूप में :-

राजनीतिक विकास, राजनीति के एक ऐसी स्थिति को कहा जाय जो आर्थिक उन्नति, प्रगति और उन्नति में सहायक हो। व्यवहार में यह दृष्टिकोण निषेधात्मक है। इससे राजनीति विकास

Scanned with CamScanner

आर्थिक विकास से साथ जुड़कर रह जाता है। इन दोनों का मिलना तर्क संगत नहीं है।

2. औद्योगिक समाजों के लिए विशिष्ट राजनीति के रूप में राजनीतिक विकास :— राजनीतिक विकास की अवधारणा भी आर्थिक विकास से जुड़ी है। इसमें माना गया है कि औद्योगिक जीवन भी एक ऐसे सामान्य प्रकार के राजनीतिक जीवन को प्रकट करता है जिसको हर समाज प्राप्त करना चाहता है। यह धारणा भी आर्थिक विकास के साथ राजनीतिक विकास को जोड़ने वाली होने के कारण असान्य हो जाती है।

3. राजनीतिक आधुनिकीकरण के रूप में राजनीतिक विकास :— कोलमैन लिप्सेट, आदि यह मानते हैं कि राजनीतिक विकास से अभिप्राय विकसित पश्चिमी और आधुनिक देशों का अध्ययन है और साथ ही उन तौर-तरीकों का अध्ययन है जिनका अनुकरण करने का प्रयास विकासशील देश कर रहे हैं। पार्ई के अनुसार ऐसे दृष्टिकोण में इस तथ्य की अवहेलना की गयी है कि पिछड़े और विकासशील देशों की अपनी ऐतिहासिक परम्पराएँ हैं जिन्हें वे हर चीज को पश्चिमी और आधुनिक का अनुकरण कर पाने की खातिर छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं।

4. राष्ट्रीय राज्य के व्यवहार के रूप में राजनीतिक विकास :— कुछ लोग यह मानते हैं कि राजनीतिक विकास में राजनीतिक जीवन का संगठन और राजनीतिक कार्यों की सम्पन्नता उन मापदण्डों के अनुसार होती है जो एक आधुनिक राष्ट्रीय राज्य में अपेक्षित है। पार्ई ने इस दृष्टिकोण को अस्वीकार किया है। उसका कहना है कि राष्ट्रवाद राजनीतिक विकास को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक शर्त तो है, लेकिन यह पर्याप्त शर्त नहीं है। राजनीतिक विकास को राष्ट्र निर्माण के सर्वसम भोग समझा जाता है, न कि केवल राष्ट्र राज्य के साथ।

5. लोकतंत्र के निर्माण के रूप में राजनीतिक विकास :— इस दृष्टिकोण के अनुसार राजनीतिक विकास का अर्थ है लोकतांत्रिक संस्थाओं और व्यवहारों की स्थापना। पार्ई का कहना है कि विकास और लोकतंत्र को परस्पर आबद्ध और अभिन्न नहीं मानना चाहिए क्योंकि दोनों ही भिन्न बातें हैं।

Scanned with CamScanner

लूसियन पाई राजनीतिक विकास की अवधारणा पर गहराई से विचार करने वाले प्रमुख विद्वान हैं। उनके अनुसार राजनीतिक विकास का अर्थ करते समय इसके निम्नलिक तत्वों को ध्यान में रखना आवश्यक है। उनके अनुसार हम राजनीतिक विकास को हम तीन स्तर पर होने वाले विकासों के रूप में हम परिभाषित कर सकते हैं।

1. सम्पूर्ण जनसंख्या के संदर्भ में :— इस दृष्टि में राजनीतिक विकास का अर्थ है कि राजनीतिक व्यवस्था की जनता की प्रवृति में कोई मौलिक परिवर्तन हुआ है कि नहीं। जनता व्यवस्था में उदासीन है, अथवा सहभागी, जनता नौकरशाही पर निर्भर है अथवा प्रशासन में सहभागी, आदि। अगर किसी व्यवस्था की जनता में अभिवृत्यात्मक व व्यवहारिक परिवर्तन हो जाए तो इस आधार पर राजनीतिक व्यवस्था को राजनीतिक दृष्टि से विकसित कहा जाएगा।

2. शासकीय और सामान्य व्यवस्थाओं निष्पादन के संदर्भ में :— शासकीय और सामान्य व्यवस्थाओं निष्पादन के स्तर पर राजनीतिक विकास का अर्थ राजनीतिक व्यवस्था की उस अभिवृद्ध क्षमता से लिया जाता है जिससे वह सार्वजनिक मामलों को आधिकारिक और अच्छी तरह से निष्पादित करने लगती है। इस दृष्टि से राजनीतिक व्यवस्था के विकसित होने का पता इस बात से लगाया जाता है कि क्या राजनीतिक व्यवस्था राजनीतिक मामलों का उचित प्रबन्ध कर पाती है, क्या राजनीतिक विवादों को नियंत्रित कर पाती है, क्या जनता की मांगों का उचित निबटारा कर पाती है।

3. राजनीतिक के संगठन के संदर्भ में :— राजनीतिक संगठन के रूप में राजनीतिक विकास वाली राजनीतिक व्यवस्थाओं में तीन बातें पाई जाती हैं। पाई ने इन तीन लक्षणों को समानता, क्षमता तथा विभेदीकरण कहा है। वह उन्हीं राजनीतिक व्यवस्थाओं को राजनीतिक विकास के मार्ग पर अग्रसर मानता है, जिनमें जनता में समानता का सिद्धान्त लागू हो राजनीतिक और सरकार आनेवाले मांगों, विवादों और राजनीतिक मामलों का निष्पादन करने में समर्थ हों और इनसे संबंधित रचनायें, अलग-अलग और विशेषीकृत होते हुए भी समन्वय और सामंजस्य रखती हों।

"लूसियन पाई" के शब्दों में "राजनीतिक विकास, संस्कृति का विसरण (Deffusion) और जीवन के पुराने प्रतिमानों को नयी मांगों के अनुकूल बनाने, उन्हें उनके साथ मिलाने या उनके साथ सामंजस्य बैठाना है"

Scanned with CamScanner

आमण्ड और पॉवेल के अनुसार "राजनीतिक विकास राजनीतिक संरचनाओं का अभिवृद्ध विभिन्नीकरण और विशेषीकरण तथा राजनीतिक संस्कृति का बढ़ा हुआ लौकिकीकरण है"।

राजनीतिक विकास के साधन :— राजनीतिक विकास की प्रक्रिया में मुख्य रूप से भाग लेने वाले आभिकरण है।

1. क्रान्तिकारी राजनीतिक नेता :— क्रान्तिकारी नेता संकट की स्थिति में सत्ता में आते है। लेकिन सत्ता में आते ही उन्हे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उन्हे विकास की दृष्टि से उन्हे चिरस्थायी नीतियां तुरन्त लाग करने की आवश्यकता होती है। उन्हे राष्ट्रीय एकता की स्थापना की सर्वाधिक आवश्यकता होती है। क्रान्तिकारी नेताओं मे विशेष गुणका होना आवश्यक है, यदि उनका व्यक्तित्व अधिक प्रभावशाली है तो वह अवश्य सफल होंगे।

2. राजनीतिक दल :— राजनीतिक दल राजनीतिक विकास की प्रक्रिया को गति प्रदान करते है। राजनीतिक दलों के माध्यम से राजनीतिक नेतृत्व का विकास किया जाता है। लोकतांत्रिक पद्धति में राजनीतिक दल मतदान का विस्तार कर राजनीतिक विस्तार कर राजनीतिक सहभागिता के अवसर प्रदान करते है

3. सेना :— जब विशेष वर्ग और राजनीतिक दल राजनीतिक विकास को नेतृत्व प्रदान करने में असफल होते है तो विकासशील देश के सामने एक ही विकल्प रह जाता है कि सेना समस्त शक्तियों को अपने हाथ में लेले। सेना के हस्तक्षेप से राजनीतिक विकास की प्रक्रिया तेज हो जाती है। विकासशील देशों के शासन को स्थायित्व प्रदान करने का कार्य सेना के द्वारा किया जाता है।

4. आधुनिक नौकरशाही :— नौकरशाही शासन को स्थिरता प्रदान करती है, परम्परागत समाज को आधुनिक परिवेश में लाने का प्रयत्न करती है और सुदृढ़ और कुशल नीतियों से राजनीतिक विकास का मार्ग प्रशस्त करती है।

5. राष्ट्रीयता की भावना का विकास :— राजनीतिक सहभागिता के विस्तार से भी राजनीतिक विकास होता है। विकासशील देशों में जनसहभागिता पर बहुत अधिक बल दिया गया है। सहभागिता के आधार पर देश में नागरिकता की स्थिति का पता लगाया जाता है।

Scanned with CamScanner